By The Way...

बस यूँ ही

वैभव व्यास

By The Way… बस यूँ ही

Publishing-in-support-of,

FSP Media Publications

RZ 94, Sector - 6, Dwarka, New Delhi - 110075
Shubham Vihar, Mangla, Bilaspur, Chhattisgarh - 495001

Website: *www.fspmedia.in*

© Copyright, Author

All rights reserved. No part of this book may be reproduced, stored in a retrieval system, or transmitted, in any form by any means, electronic, mechanical, magnetic, optical, chemical, manual, photocopying, recording or otherwise, without the prior written consent of its writer.

ISBN: 978-93-6026-181-8

Price: ₹ 190.00

The opinions/ contents expressed in this book are solely of the author and do not represent the opinions/ standings/ thoughts of Publisher.

Printed in India

By The Way…

बस यूँ ही

(कहानी संग्रह)

By

वैभव व्यास

स्वर्गीय डॉ. राधाकृष्ण श्रीमाली
को समर्पित
आप जीवन पर्यन्त प्रेरणा स्रोत बने रहेंगे।

बस दो मिनट

लिखते समय खुद को यही सलाह देता रहा और अब आप सभी से वही गुज़ारिश दोहरा रहा हूँ कि ''By the way.. बस यूँ ही'' को बस यूँ..... ही पढ़ लीजिएगा। ये कहानियाँ टेबल–कुर्सी पर बैठकर व्यवस्थित तरीके से किया गया लिट्रेरी वर्क नहीं है। बस यूँ समझ लीजिए कि चाय की टपरियों से लेकर रेल के सफर तक और इसी तरह गली–मोहल्ले की चर्चाओं में जो दुनिया देखने को मिली, बस वही लेखनी में ढल गई।

जीवन के इस सतरंगी सफर पर जब हम निकलते हैं तो सिर्फ चटख और मन–पसन्द रंग मिलें, ये कतई ज़रूरी नहीं है। कई बार उदासी भरे रंग भी जीवन में अपनी जगह ले लेते हैं। बस वैसे ही कई किरदारों से लबरेज़ ये कहानियाँ आपको सौंप रहा हूँ।

कुछ खास नामों का ज़िक्र करने से पहले ''By the way.. बस यूँ ही'' के साथ सफर पर निकलना भी बेमानी होगा।

पापा, जिन्होंने उन्मुक्त होकर सोचना और खुद के साथ वक्त बिताना सिखाया। माँ, जिस शब्द का ज़िक्र करने से ही पूर्णता का एहसास होता है, उन्हें धन्यवाद शब्द के साथ जोड़ना भी खुद को गफलतों में उलझाने जैसा है। मेरी हर आस को विश्वास के सांचे में ढालने के साथ एक बिखरे हुए इंसान को समेटने का ज़िम्मा 'प्रज्ञा' ने आज भी बखूबी उठा रखा है। ना जाने कितने सालों से हर रोज़ कविताओं और हिन्दी गीतों के माध्यम से नित नए शब्द मेरे सामने लाकर 'दीपक' ने शब्दकोष बढ़ाने का काम बदस्तूर ज़ारी रखा हुआ है।

रघुवंश, प्रतीक और शिवांगी, जो इन कहानियों के पहले रीडर बने। उनके साथ जोधपुर, दिल्ली, अहमदाबाद और ऐसे ही कई शहरों में मिले सारे दोस्तों का शुक्रिया, जिन्होंने मुझे खुद से बाहर निकाला।

मेरी गलतियों को सुधार कर आगे बढ़ने को अगर सुरेश मामा प्रेरित ना करते तो शायद मैं आज भी मुगालतों की चादर ओढ़े Self-proclaimed Royal बनकर सो रहा होता।

अन्त में, पहले शब्द से लेकर अन्तिम शब्द तक का सफर मेरे साथ तय करने वाले नभांशु जी का हृदय से आभार। आप अगर हर बार ''बस सर थोड़ा और'' ना कहते तो शायद मैं इस परिचय तक भी नहीं पहुँच पाता।

दोस्तो, इस किताब का एक वाक्य भी आपकी सोच में घुसपैठ कर पाए तो बताइएगा ज़रूर, इंतज़ार रहेगा।

आपका,

वैभव व्यास

क्र.	कहानी क्रम	पृष्ठ क्र.
1.	फितरत	1
2.	चौराहा	17
3.	कैंटीन	24
4.	बालक बंटी प्रसाद	38
5.	इकबाल चाचा	47
6.	बोल्ड	55
7.	बुनावट	71
8.	घनघोर घन घनाहट	87
9.	एक पाँव ज़िन्दगी	98

फितरत

"इससे ज्यादा भाई साहब कोई भी ऐड एजेन्सी डिस्काउन्ट दे तो बेशक वहाँ चले जाइएगा।"

"हाँ बिल्कुल..... हाँ जी।"

कॉल काटकर डिफॉल्ट स्क्रीन आने के बाद कुंवर प्रताप ने अगले बन्दे को गालियाँ देना शुरू कर दिया। ऑफिस प्यून हसन चाचा, ठाकुर साहब को देखकर हँसने लगे।

"आप बचपन से ही ये भद्दी गालियाँ सुनते आ रहे हैं चाचा, लेकिन पता नहीं फिर भी कैसे हँस लेते हैं। जाइए एक नेवी कट और चाय लेकर आइए।"

"साले कमीने ऐड देते हैं पाँच हजार का और डिस्काउन्ट इन्हें 90 परसेन्ट चाहिए।"

एक बार फिर से घण्टी बजी, "आ गया ना साला लाइन पर!" इतना कहते हुए कुंवर प्रताप ने फिर से फोन उठाया।

"हैल्लो,"

"सर गुड इवनिंग, मैं वेल्यू फॉर मनी इन्श्योरेन्स कम्पनी से नेहा बात कर रही हूँ।"

"अबे यार, पहले मालूम चल जाता तो उठाते ही नहीं। साले इन्श्योरेन्स वाले कहाँ से बीच में आ गए?" कुंवर प्रताप सामने वाली कुर्सी पर पाँव फैलाते हुए बड़बड़ाये।

"आपका कीमती समय लेना चाहूँगी सर!"

''कीमती समय! बड़े अधिकार से कह रही हैं आप। ले लीजिए, हम कौन सा यहाँ बैठकर संविधान बदल रहे हैं।''

''आपका नाम जान सकती हूँ सर?''

''ठाकुर कुंवर प्रताप! वैसे सम्पर्क के लोग ठाकुर साहब कहते हैं। घर का नाम भी बताएँ या इसी से काम चल जाएगा?''

''नो इट इस ओके सर, जान सकती हूँ कि आप बिजनेस करते हैं या नौकरी?''

''बिजनेस में पैसा डुबोने के बाद नौकरी कर रहा हूँ मैडम। अब दोनों साथ ही करने की सोच रहा हूँ। आप कुछ राय देना चाहेंगी?''

''नो सर, इसमें तो मैं क्या कह सकती हूँ। वैसे आपका डेट ऑफ बर्थ जान सकती हूँ?''

''दादाजी ने कुछ दिन पहले ही मेरा पचहत्तरवाँ जन्मदिन मनाया है। परिचय नहीं था वरना आपको भी ज़रूर बुलाते।''

ठाकुर साहब को मनोरंजन के लिए अच्छा ज़रिया मिल गया था।

''सर आप मज़ाक काफी अच्छा कर लेते हैं।'' नेहा हर उल्टे सवाल का सीधा जवाब दिए जा रही थी।

''हम सीरियस भी अच्छा हो लेते हैं। होकर बताएं?''

इतने में हसन चाचा भी आ गए और ठाकुर साहब को सिगरेट पकड़ाने लगे। ठाकुर साहब ने फोन कसकर हथेली से दबाया (शायद म्यूट का ऑप्शन उन्हें मालूम नहीं था) और हसन चाचा से बोले– ''फोन चल रहा है काकाश्री जलाकर दीजिए, और हाँ इतना लम्बा कश मत मारियेगा कि साला पीछे कुछ बचे ही नहीं।''

ठाकुर साहब ने मोबाइल कान से सटाते हुए कहा ''व्यवधान के लिए क्षमा मैडम, आप शुरू हो सकती हैं फिर से।''

''तो जैसा कि मैंने आपको बताया कि मैं वेल्यू फॉर मनी इन्श्योरेन्स ग्रुप से बात कर रही हूँ। हमारे पास आपके लिए लाइफ कवर के कुछ प्लान्स हैं।''

''बहुत ही बढ़िया मैडम, लेकिन साला यहाँ आज का दिन ही इन्श्योर नहीं है और आप लाइफ कवर करने की बात कर रही हैं।''

''मैं जो प्लान आपको बताना चाहती हूँ सर वो काफी Beneficial है।''

''अच्छा! चलो बता ही दो मैडम, कोई और होता तो देशी भजन सुनाकर कॉल काट देते। आपकी आवाज सुनने में अच्छी लगी तो दो मिनट और सही।''

''सर, इस पॉलिसी के तहत Per Month आपको दो हज़ार रुपए जमा करवाने होंगे या फिर आप चौबीस हज़ार Yearly भी जमा करवा सकते हैं, डेथ कवर के रूप में कोई अनहोनी हो जाने पर आपको पचास लाख रुपए मिलेंगे।''

''अनहोनी जैसे?'' ठाकुर साहब ने पूछा।

''जैसे कि सर डेथ हो जाने पर।''

''तो डेथ हो जाने पर हमें कैसे मिलेंगे? आपकी ऊपर भी कोई ब्रांच है क्या?''

''सॉरी सर! आपसे मेरा मतलब आपकी फैमिली से है।''

''पचास लाख देखकर फैमिली वाले बावले हो जायेंगे मैडम। सब अपनी किस्मत लेकर आते हैं। जाने के बाद फोटो से माला भी साल में एक बार ही चेंज होती है। कोई विशेष मजा नहीं आया आपके प्लान में।''

ये बात नेहा भी जानती थी। बस उसे तो कॉल टाइम एवरेज बढ़ाना था।

''कोई नहीं सर और भी काफी स्कीम्स हैं हमारे पास।''

''अरे अब कष्ट मत कीजिए मैडम। हाँ लेकिन एक बात जरूर है।''

''जी बताइए सर।''

''आप अपनी आवाज़ को गलत जगह इन्वेस्ट कर रही हैं।'' आदतन ठाकुर साहब ने सलाह भी दे दी।

''समय देने के लिए शुक्रिया सर, आपका दिन शुभ हो।''

''दिन तो गया, अब रात पैग लगाकर ही शुभ करनी होगी। ओके, जय राम जी की मैडम, बाय–बाय!''

10 बाई 10 के कैबिन में अब सिगरेट का धुआँ अपना साम्राज्य फैला चुका था। एक्जॉस्ट फैन चालू करने के बाद ठाकुर साहब ने बिखरे हुए कुछ पन्नों को समेटा तो कुछ को फाड़–मरोड़कर डस्टबिन में डाल दिया। उसके बाद अगले 15 मिनट में सारा काम निपटा दिया, जिसके लिए वो पूरे दिन की तनख्वाह लेते थे। जो 90 परसेन्ट डिस्काउन्ट माँग रहे थे उन्हें 80 पर सेटल किया। जिन्होंने सिर्फ पूछताछ ही की थी उन्हें भी ज़बरदस्ती गाड़ी में बिठा दिया।

ऐड एजेन्सी के दफ्तर से निकलकर ठाकुर साहब कुछ मिनटों में ही ठिकाने पहुँच जाते, क्योंकि यहाँ की दुकानों पर उन्हें अपने दर्जे का इन्टेलेक्चुअल नजर नहीं आता था और यहाँ की बातें भी सेक्स और सेंसेक्स से लिपटी होती थीं। सेक्स की रसीली दुनिया से उनका परिचय मस्तराम की किताबों ने बचपन में ही करवा दिया था। ये बात अलग है कि अनुभव काफी जतन के बाद कॉलेज में हुआ था और सेंसेक्स में चपत लगने के बाद फिर से उलझने की इच्छा नहीं थी।

लेकिन दिल्ली से उलट कानपुर के गल्लों पर तो नगर पालिका की राजनीति से संसद तक की धज्जियाँ उधेड़ दी जातीं और ठाकुर साहब के ओज से जोश में आकर लड़के उनके खाने–पीने का ज़िम्मा अपने ऊपर ले लेते थे।

हाँ, यहाँ दिल्ली में शराब के ठेके पर काम करने वाले आदमी से उन्होंने पहचान जरूर बढ़ा ली थी, जिससे आइस क्यूब्स फ्री में मिल जाते। क्योंकि बेवड़े मकान मालिक से बर्फ लेने के चक्कर में किराये से ज्यादा दारू पर खर्चा हो रहा था।

घर आकर ठाकुर साहब पैन्ट उतार ही रहे थे कि तभी मोबाइल की घण्टी बजी।

''हाँ भाई कौन है?'' ऑफिस से घर आते ही ठाकुर साहब की आवाज़ में जान और रौब बढ़ जाया करता था।

''सर मैं नेहा!''

''क्या मैडम दो–दो शिफ्ट में काम कर रही हो? रात को भी फोन घुमा दिया।''

''नहीं सर इस बार तो खुद से ही किया है।''

''तो पिछली बार क्या पड़ौसी से करवाया था?'' खुद की बात पर ठाकुर साहब खुद ही हँसे।

''खुद से मतलब ये मेरा पर्सनल नम्बर है सर और आपको इन्श्योरेन्स के लिए कॉल नहीं किया है।''

''ओहो..हो..हो..! अब समझा, हमारे नाम से आप हमें कोई बड़ा रईस समझ बैठी थीं। लेकिन नेहा जी आपको बता दें कि हम नाम से ही ठाकुर हैं, बाकी हालत तो शोले वाले ठाकुर साहब से भी खस्ता है।''

''मैंने बताया ना सर, इन्श्योरेन्स के लिए कॉल नहीं किया है।''

''अच्छा–अच्छा तब तो आपको हमारी वो आवाज़ में इन्वेस्टमेन्ट वाली बात जम गई लगती है?'' ठाकुर साहब ने एक पाँव खिड़की पर रखते हुए कहा।

''हाँ सर, सोचा आप से ही पूछ लूँ ये आवाज़ कहाँ इन्वेस्ट करूँ?''

''अगर मेरे साथ इन्वेस्ट करने का मूड है तो सप्ताह भर रुकना पड़ेगा। अभी थोड़ी जेब टाइट है। दारू–सुट्टे के भी टोटे पड़े हुए हैं।''

''कोई प्रॉब्लम नहीं है सर, हर बुधवार को हमारे कॉल सेन्टर में वॉक् इन्स चलते रहते हैं, मैं एड्रेस मैसेज कर देती हूँ। सी.वी. लेकर आ जाइयेगा और फिर lunch coupons भी मिल जाते हैं। दो से तीन के बीच मैं भी Free रहती हूँ। वहीं मिल लेंगे।'' अपनी सादर भावनाएँ प्रकट करके नेहा ने फोन काट दिया।

वैभव व्यास

2007 में जोधपुर से BCA और फिर 2010 में अहमदाबाद से MBA के बाद जिंदगी को मार्केटिंग प्रोफेशनल बनकर आगे बढ़ा रहे है। पारिवारिक स्तर पर ज्योतिष के माहौल ने Formative Age से ही लोगों को समझने का मौका दिया। पढ़ाई का लिट्रेचर के सब्जेक्ट्स से नाता ना होने के बावजूद लिखने की इच्छा कुलबुलाती रही।

स्कूल के समय से ही कविताएं और फिर शॉर्ट फिल्मस की स्क्रिप्ट में सक्रिय रहे। वैभव की मानें तो वे जो कुछ भी अपने आस–पास Observe करते है बस वही लेखनी में ढल जाता है और दोस्तों का कहना है कि इनकी बातें और सोच हमेशा कुछ नयापन लिए होती है। ''By the way... बस यूँ ही'' इनकी पहली किताब है।

FSP
FSP MEDIA PUBLICATIONS

BOOK AVAILABLE
Flipkart
GET IT ON Google Play
amazon
amazonkindle

EBOOK AVAILABLE

ISBN 978-93-6024-181-8
9 789360 261818